पत्र-लेखन
(अनौपचारिक)

अध्याय

Scanned with CamScanner

अनौपचारिक पत्र

1. आपने मित्र को पत्र लिखिए जिसमें हिंदी का महत्व और लाभ बताए गए हों।

79, रामनगर

दिल्ली।

दिनांक: .....

प्रिय मुक्ता,

नमस्कार।

अभी पिछले हफ्ते तुम्हारा स्नेहभरा पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि तुमने वार्षिक परीक्षा के लिए अभी से तैयारी शुरू कर दी है। तुम हिंदी भाषा के विषय में जानना चाहते थे। मैं तुम्हें यह विवरण भेज रहा हूँ।

हिंदी भारत की राजभाषा और राष्ट्रभाषा है। इसका ज्ञान प्रत्येक भारतीय को होना चाहिए। सन् 1965 से केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी में कार्य आरंभ हो चुका है। हालाँकि उसके साथ अंग्रेज़ी में कार्य करने का प्रावधान भी संविधान में किया गया है। भारत सरकार ने निश्चय किया कि केंद्र के सभी कर्मचारियों को शीघ्र प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ परीक्षाएँ पास कर लेनी चाहिए। ये परीक्षाएँ भारत का गृह मंत्रालय लेता है। जो व्यक्ति स्कूल स्तर तक हिंदी पढ़कर आए हैं, उन्हें इन परीक्षाओं में बैठने की आवश्यकता नहीं है।

Scanned with CamScanner

हिंदी भारत की संपर्क भाषा है। देश में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में चाहे वे देश के किसी भी स्थान पर स्थित हों, कार्य हिंदी या अंग्रेज़ी में होता है। इसके अलावा, हिंदी व्यापार की भाषा भी है। सभी धर्मस्थलों पर हिंदी का प्रयोग होता है। हिंदी देश की एकता की कड़ी है। हिंदी विकसित भाषा है। इसका साहित्य विशाल है। उम्मीद है कि तुम हिंदी के महत्त्व को समझ चुके होगे। शेष कुशल है।

आपका दोस्त,

अमर

2. अपने मित्र को पत्र लिखकर बताइए कि महानगरीय जीवन दुखद भी है तथा सुखद भी।

300-डी, विकासपुरी

नई दिल्ली।

दिनांक: .....

प्रिय मित्र सुबोध,

सप्रेम नमस्कार।

तुम्हारा पत्र मिले काफी दिन हो गए। मन में चिंता हो रही थी तो मैंने तुम्हें पत्र लिखने का निश्चय किया। पहले तुमने दिल्ली में रहने की उत्सुकता दिखाई थी। आज मैं तुम्हें दिल्ली के जीवन से अवगत कराना चाहता हूँ।

तुम जानते हो कि दिल्ली भारत की राजधानी है। इसका पुराना इतिहास है। यह नगर अनेक बार उजड़ा और बसा। यहाँ पर भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के लोग आए और गए। यहाँ माया भी है तथा तप भी है। यहाँ की चौड़ी सड़कें, गगनचुंबी इमारतें, ऐतिहासिक इमारतें आदि एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती हैं। यहाँ संसार की सब सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अनेक शिक्षण संस्थाएँ, नौकरी के लिए हजारों क्षेत्र उपलब्ध हैं। चिकित्सा सुविधाएँ विद्यमान हैं।

महानगरी का दूसरा रूप अत्यंत बुरा है। यहाँ घंटों यातायात जाम रहता है। दूसरे, यहाँ आवास की समस्या है। मकान मिलना तो लाटरी खुलने के समान है। यहाँ पारस्परिक सद्भाव का अभाव है। सारा जीवन मशीनी ढंग से चलता रहता है। यहाँ निर्धन व्यक्ति के लिए कोई जगह नहीं। आशा है कि तुम महानगरीय जीवन से कुछ परिचित हो गए होंगे। शेष जानकारी साक्षात्कार होने पर मिल जाएगी। शेष सब कुशल है।

छोटों को प्यार और बड़ों को प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र,

भारत

3. पिता जी से रुपये मँगवाने के लिए पत्र लिखिए।

सर्वोदय विद्यालय,

पश्चिम विहार

नई दिल्ली।

दिनांक: .....

आदरणीय पिता जी,

सादर प्रणाम।

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि मैं नवीं कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करके पास हो गया हूँ। मैंने 88 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। अब मुझे दसवीं कक्षा की पुस्तकें, कॉपियाँ आदि खरीदनी हैं और नए कपड़े भी सिलवाने हैं। इनके लिए पैसों की जरूरत है। इसके अलावा, विद्यालय ने यह निर्णय लिया है कि नई कक्षाओं की पढ़ाई आरंभ करने से पहले शैक्षणिक टूर बनाया जाए। इसके लिए, हिमाचल प्रदेश में तारादेवी स्थान निश्चित हुआ है। इस सारे कार्यक्रम में लगभग 1,500 रुपये खर्च होंगे। अत: आपसे प्रार्थना है कि आप शीघ्र ही पर्वतीय यात्रा की अनुमति के साथ पंद्रह सौ रुपये भेजने की कृपा करें।

माताजी को प्रणाम। बहन सोनिया व छोटे भाई मोहन को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

Scanned with CamScanner

4. अपने मित्र को पत्र लिखकर ग्रीष्मावकाश अपने साथ बिताने का निमंत्रण दीजिए।

भवानी भवन,

4/27, लाजपत नगर

नयी दिल्ली।

दिनांक: .....

प्रिय विजय,

सप्रेम नमस्कार।

आज तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर पता चला कि तुम्हारे पिताजी विदेश यात्रा पर जा रहे हैं और इस कारण से तुम्हारा मसूरी जाने का कार्यक्रम रद्द हो गया है। मैंने तुम्हें बताया था कि इस वर्ष की गरमी की छुट्टियों में हम शिमला जा रहे हैं। हम 30 मई को जाएँगे तथा लगभग 15 दिन वहाँ रहेंगे। शिमला बहुत खूबसूरत जगह है। यहाँ की जलवायु भी स्वास्थ्यवर्धक है। यहाँ देखने योग्य अनेक चीजें हैं। मेरी इच्छा है कि तुम भी हमारे साथ चलो। आनंद रहेगा। पिछले वर्ष मैं तुम्हारे साथ पटना गया था, अत: मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे पिताजी तुम्हें मेरे साथ जाने की अनुमति दे देंगे। फिर भी यदि कोई समस्या हो तो मुझे लिखना या फोन कर देना। मैं अपने पिताजी से तुम्हारे पिताजी की बात करवा दूँगा।

मैं तुम्हारे जवाब की प्रतीक्षा करूँगा। शेष मिलने पर।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

रविंद्र

5. अपने पिताजी को स्वयं के बारे में बताते हुए एक पत्र लिखिए।

12/7, शांतिनगर

बुराड़ी।

दिनांक: .....

पूज्य पिताजी,

सादर चरणस्पर्श।

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ। घर के समाचार ज्ञात हुए। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि भाई साहब होली की छुट्टियों में घर आ रहे हैं। मेरा विद्यालय भी पहली मार्च से चार दिन के लिए बंद रहेगा। मैं 15 दिसंबर को शाम तक घर अवश्य आ जाऊँगा। आपके भेजे हुए रुपए प्राप्त हो गए हैं। मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। अपनी कक्षा की परीक्षा में मुझे दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है। आशा है, आप स्वस्थ और सानंद होंगे। शेष कुशल है। माताजी तथा सभी बड़ों को सादर प्रणाम और छोटों को आशीर्वाद।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

राज सक्सेना

लिखिए।

Scanned with CamScanner

7. अपनी माताजी को एक पत्र लिखिए।

सी-315, सेक्टर-9

वसुंधरा, गाजियाबाद–201015

दिनांक: ....

परमपूज्य माता जी,

चरण वंदना।

कल आपका पत्र मिला, पढ़कर मन अति प्रसन्न हुआ कि घर में सब सकुशल हैं। आपने मुझे पत्र में लिखा है कि मैं पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य क्रिया-कलापों में भी भाग लूँ, क्योंकि आज के परिवेश में अतिरिक्त क्रिया-कलापों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मैंने आपके कथनानुसार अपने विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा आशु-भाषण प्रतियोगिता के लिए नामांकन करवा दिया है तथा तैयारी भी आरंभ कर दी है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि विद्यालय की क्रिकेट टीम में भी मुझे चुन लिया गया है। हॉस्टल में रहने वाले अन्य सहपाठियों से मेरी अच्छी जान-पहचान हो गई है। मेरी पढ़ाई भी अच्छी चल रही है। दीपा और ज्योति को मेरा बहुत-बहुत प्यार तथा पिताजी को सादर प्रणाम।

आपका पुत्र,

आयुष

Scanned with CamScanner

11. अपने पिताजी को पत्र लिखकर अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव के विषय में बताइए।

760, पार्क रोड,

देहरादून।

दिनांक : .....

आदरणीय पिताजी,

चरण स्पर्श।

गत सप्ताह आपका कुशल पत्र प्राप्त हुआ। इसका उत्तर शीघ्र नहीं दे सका क्योंकि पिछले एक माह से हम सभी छात्र/छात्राएँ, शिक्षक विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारी में जुटे हुए थे। कल ही यह वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ है। आज मैंने सोचा कि आपको इसका विवरण भी लिख भेजूँ।

इस वर्ष हमारे विद्यालय ने 50 वर्ष पूरे किए हैं। अत: स्वर्ण जयंती मनाई गई। सारे भवन को दुल्हन की तरह सजाया गया था। इस बार हमारे मुख्य अतिथि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री थे। सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। प्राचार्य ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। फिर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसमें लोकनृत्य, लोकगीत, एकांकी, भंगड़ा आदि थे। 'औरंगजेब की आखिरी रात' एकांकी का सफल मंचन किया गया। इस अवसर पर कला-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के छोटे बच्चों ने अपने चित्रों को प्रदर्शित किया था।

अंत में, प्राचार्य ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। मुख्य अतिथि ने विद्यालय की गतिविधियों में भाग लने वाले छात्रों को पुरस्कार वितरित किए। मुझे भी अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए।

कार्यक्रम के अंत में, मुख्य अतिथि ने विद्यालय की प्रगति की प्रशंसा की। यदि आप सभी इस अवसर पर होते तो आनंद दोगुना हो जाता।

मेरी पढ़ाई ठीक चल रही है। शेष कुशल।

आपका पुत्र

कपिल

12. बुआ को उनके जन्म-दिवस पर वधाई देते हुए पत्र लिखिए।

ई-28 शास्त्री नगर,

मेरठ, उत्तर प्रदेश

दिनांक : .....

पूज्य बुआ जी,

सादर नमस्ते,

आशा है आप सकुशल अपना जन्मदिन मना रही होंगी। चारु बहन और यश भैया 'केक' और बढ़िया दावत का आनंद ले रहे होंगे। कल से मेरी वार्षिक परीक्षाएँ शुरू हैं इसलिए आ नहीं सकती। एक बार मन में आया और पापा जी से कहा भी। परंतु उन्होंने मना कर दिया और कहा, ''तुम्हारी वार्षिक परीक्षाएँ शुरू हो रही हैं इसलिए तुम मन लगाकर पढ़ो और बुआ जी को 'बधाई-पत्र' भेज दो।'' नाराज मत होइएगा। मम्मी, पापा, भैया और मेरी ओर से आपको जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई।

फूफा जी, भैया और दीदी को भी प्रणाम कहिएगा।

आपकी प्रिय भतीजी

स्नेहा

Scanned with CamScanner